समाजशास्त्र परिचय Notes Chapter 3 Class 11 Samajshastra Parichay सामाजिक संस्थाओं को समझना UP Board

अध्याय-3

सामाजिक संस्थाओं को समझना

स्मरणीय बिन्दु :

- **सामाजिक संस्थाओं** को सामाजिक मानकों, आस्थाओं, मूल्यों और समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए निर्मित संबंधों की भूमिका के जटिल ताने – बाने के रूप में देखा जाता है।
- **महत्वपूर्ण सामाजिक संस्थाए हैं :**

– संस्था उसे कहा जाता है जो स्थापित या कम से कम कानून या प्रथा द्वारा स्वीकृत नियमों के अनुसार कार्य करती है और उसके नियमित तथा निरंतर कार्यचालन को इन नियमों काम जाने बिना समझा नहीं जा सकता। संस्थाएँ व्यक्तियों पर प्रतिबंध लगाती है, साथ ही ये व्यक्तियों को अवसर भी प्रदान करती हैं।

सामाजिक संस्थाएँ सामाजिक जरूरतों को पूरा करने के लिए विद्यमान होती है।

- मूल परिवार को औद्योगिक समाज की आवश्यकताएँ पूरी करने वाली एक सर्वोत्तम साधन संपन्न इकाई के रूप में देखा जाता है। ऐसे परिवार में घर का एक सदस्य से बाहर कार्य करता है और दूसरा सदस्य घर व बच्चों की देखभाल करता है।

विभिन्न समाजों में परिवार के विभिन्न स्वरूप पाए जाते हैं :

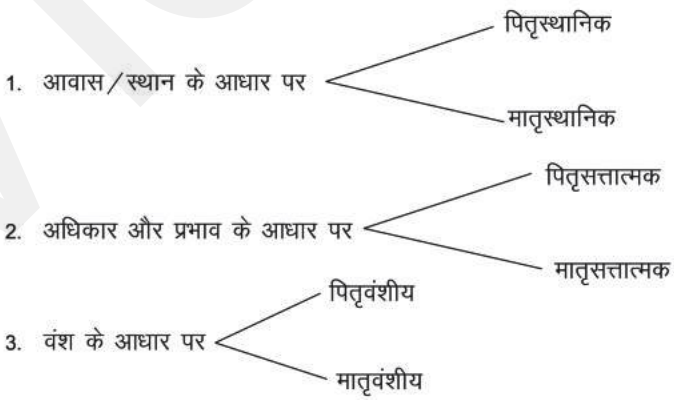

https://www.evidyarthi.in

– जन्म का परिवार और प्रजनन का परिवार।

– एकल परिवार और संयुक्त परिवार।

- **महिला प्रधान घर/परिवार**

  जब पुरूष शहरी क्षेत्रों में चले जाते हैं तो महिलाओं को हल चलाना पड़ता है और खेती के कार्यो का प्रबंध करना पड़ता है। कई बार वे अपने परिवार की एकमात्र भरण –पोषण करने वाली बन जाती हैं। ऐसे परिवारों को महिला–प्रधान घर कहा जाता है। उदाहरण– उत्तरी आंधप्रदेश में कोलम जनजाती समुदाय।

- **परिवार लिंगवादी होता है–**

  आज भी यही विश्वास है कि लड़का वृद्धावस्था में अभिभावकों की सहायता करेगाा और लड़की विवाह करके दूसरे घर चली जाएगीं इस तरह लड़कियों की अपेक्षा की जाती है। कन्या भ्रूण हत्या को बढ़ावा मिलता है। 2001 की जनगणना के अनुसार प्रति हजार लड़को पर 927 लड़कियाँ हैं। समृद्ध राज्यों जैसे– पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में हालात बहुत खराब हैं।

- परिवार प्रत्यक्ष नातेदारी संबंधों से जुड़े संबंधों से जुड़ते व्यक्तियों का एक समूह है। नातेदारी बंधन व्यक्तियों के बीच के वह सूत्र होते हैं जो या तो विवाह के माध्यम से या वंश परम्परा के माध्यम से रक्त संबंधियों को जोड़ते हैं।

- रक्त के माध्यम से बने नातेदारों को समरक्त नातेदार/रक्तमूलक नातेदार और विवाह के माध्यम से बने नातेदारों को वैवाहिक नातेदार/विवाहमूलक नातेदार दकहते हैं।

- **विवाह संस्था**

  1. विवाह को दो वयस्क (रूत्री/पुरूष) व्यक्तियों के बीच लैगिक संबंधों की सामाजिक स्वीकृति और अनुमोदन के रूप में परिभाषित किया जाता है।

  2. **विवाह के विभिन्न स्वरूप :**

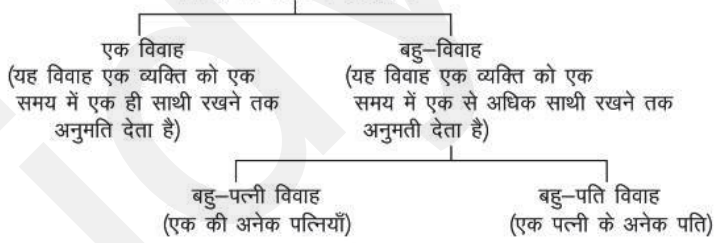

– **अंतर्विवाह** : इस विवाह में व्यक्ति उसी सांस्कृतिक समूह में विवाह करता है जिसका वह पहले से ही सदस्य है। उदाहरण– जाति।

– **बहिर्विवाह** : इस विवाह में व्यक्ति अपने समूह से बाहर विवाह करता है। उदाहरण– गोत्र, जाति और नस्ल।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in

- **कार्य और आर्थिक जीवन :**

  कार्य को शारीरिक और मानसिक परिश्रमों के द्वारा किए जाने वाले ऐसे सवैतनिक या अवैतनिक कार्यों के रूप में परिभाषित कर सकते हैं जिनका उद्देश्य मानव की आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करना है।

- आधुनिक समाजों की अर्थव्यवस्था की अनेक महत्वपूर्ण विशेषताएँ हैं:
  - अत्याधिक जटिल श्रम में विभाजन
  - कार्य के स्थान में परिवर्तन
  - औद्योगिक प्रौद्योगिकी में विकास
  - पूँजीपति उद्योगपतियों के कारखाने
  - विशिष्ट कार्य के अनुसार वेतन
  - प्रबंधक द्वारा कार्यों का निरीक्षण
  - श्रमिक की उत्पादकता बढ़ाना और अनुशासन बनाए रखना
  - परस्पर अर्थव्यवस्था का असीमित विस्तार

- **कार्य रूपांतरण :**
  - औद्योगिक प्रक्रियाएँ सरल संक्रियाओं में विभाजित।
  - थोक उत्पादन के लिए थोक बाजारों की आवश्यकता।
  - उत्पादन की प्रक्रिया में नव परिवर्तन, स्वचालित उत्पादन की कड़ियों का निर्माण।
  - उदार उत्पादन और कार्य विकेंद्रीकरण।

- राजनीति संस्थाओं का सरोकार समाज के दो महत्वपूर्ण पहलू है।
  - **शक्ति** : शक्ति व्यक्तियों सा समूहों द्वारा दूसरों के विरोध करने के बावजूद अपनी इच्छा पूरी करने की योग्यता है।
  - **सत्ता** : शक्ति का उपयोग सत्ता के माध्यम से किया जाता है। सत्ता शक्ति का वह रूप है जिसे वैध होने के रूप में स्वीकार किया जाता है।
  - राजविहीन समाज ऐसा समाज जिसमें सरकार की औपचारिक संस्थाओं का अभाव हो।
  - राज्य की संकल्पना राज्य वहाँ विद्यमान होता है जहाँ सरकार का एक राजनीतिक तंत्र एक निश्चित क्षेत्र पर शासन करता है।

- आधुनिक राज्य प्रभुसत्ता, नागरिकता और अवसर राष्ट्रवादी विचारों द्वारा परिभाषित है :
  - प्रभुसत्ता : प्रभुसत्ता का अभिप्राय एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र पर एक राज्य के अविवादित शासन से है।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in

उदाहरण :

नागरिकता के अधिकार :

(1) नागरिक अधिकार : भाषण और धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार।

(2) राजनीतिक अधिकार : चुनाव में शामिल होने का अधिकार।

(3) सामाजिक अधिकार : स्वास्थ्य लाभ, समाज कल्याण, बेरोजगारी भत्ता और न्यूनतम मजदूरी निर्धारित करने के अधिकारी।

- **धर्म :** इमाइल दुर्खीम के अनुसार " धर्म पवित्र वस्तुओं से संबंधित अनेक विश्वासों अनेक विशवासों और व्यवहारों की एक ऐसी संगठित व्यवस्था है जो व्यक्तियों को एक नैतिक समुदाय की भावना में बाँधती है जो उसी प्रकार विश्वासों और व्यवहारों को अभिव्यक्त करते हैं।"
- सभी धर्मों की समान विशेषताएँ हैं :
  1. प्रतीको का समुच्चय, श्रद्धा या सम्मान की भावनाएँ
  2. अनुष्ठान या समारोह
  3. विश्वासकर्ताओं का एक समुदाय
  4. धर्म के साथ संबद्ध अनुष्ठान विविध प्रकार कि होते हैं।

  विशेष प्रकार का भोजन करना
  प्रार्थना करना
  गुणगान करना
  भजन करना
  उपवास रखना

  5. सामाजिक शक्तियाँ हमेशा और अनिवार्यतः धार्मिक संस्थाओं को प्रभावित करती हैं। धार्मिक अनुष्ठान प्रायः व्यक्तियों द्वारा अपने दैनिक जीवन में किए जाते है। धर्म एक पवित्र क्षेत्र है। जो बात सबमें समान है वह है श्रद्धा की भावना, पवित्र स्थानों या स्थितियों की पहचान और अनेक प्रति सम्मान की भावना।
- **शिक्षा :** शिक्षा सपूंर्ण जीवन चलने वाली प्रक्रिया है जिसमे सीखने की औपचारिक और अनौपचारिक दोनों प्रकार की संस्थाएँ शामिल हैं।
- शिक्षा स्तरीकरण के मुख्य अभिकर्त्ता के रूप में कार्य करती है :
- सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार पर विभिन्न प्रकार के विद्यालयों में जाते हैं।
- विद्यालयी शिक्षा, संभ्रांत और सामान्य के बीच विद्यमान भेद को और अधिक गहरा करती है।
- विशेषाधिकारी प्राप्त विद्यालयों में जाने वाले बच्चों में आत्मविशवास आ जाता है जबकि इससे वंचित बच्चे इसके विपरीत भाव का अनुभव कर सकते हैं।
- ऐसे और अनेक बच्चे है जो विद्यालय नहीं जा सकते या विद्यालय जाना बीच में ही छोड़ देते हैं।

4/9
https://www.evidyarthi.in

- लिंग और जातिगत भेदभाव किस तरह शिक्षा के अवसरों का अतिक्रमण करते हैं।

परिवार के स्वरूपों में परिवर्तन

1. संयुक्त परिवारों का टूटना।
2. पारिवारिक व्यवसायों में कमी।
3. स्त्रियों का शिक्षित और आत्मनिर्भर होना।
4. आर्थिक असुरक्षा के कारण देरी से विवाह या विवाह न करना।
5. नगरों में सम्बन्ध विच्छेद व तलाक के मामलों का बढ़ना।

शिक्षा के प्रकार

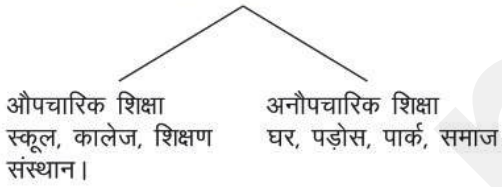

नागरिकः

- उस सदस्यता से जुडे अधिकार और कर्तव्यों दोनों के साथ एक रानीतिक समुदाय का एक सदस्य।

श्रम विभाजनः

- सभी समाजों में श्रम विभाजन का कुछ प्राथमिकता रूप है
- इसमें कार्य, कार्यों की विशेषज्ञता शामिल है
- विभिन्न व्यवसायों को एक उत्पादन प्रणाली के भीतरी संयुक्त किया जाता है।
- औद्योगिकीकरण के विकास के साथ, श्रम का विभाजन किसी भी प्रकार के उत्पादन प्रणाली की तुलना में अधिक जटिल हो जाता है।
- आधुनिक दुनिया में श्रम विभाजन का रूप अंतराष्ट्रीय है।
- लिंग को समाज के बुनियादी सिद्यांत के रूप में देखा जाता है।
- व्यवहार के बारे में सामाजिक अपेक्षाएं प्रत्येक लिंग के सदस्यों के लिए उचित मानी जाती है।
- अनुभवजन्य जाचः सामाजिक अध्ययन के किसी दिए गए क्षेत्र में वास्तविक जांच की गई।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in

अंतविवाहः

- जब विवाह एक विशिष्ट जाती वर्ग या आदिवासी समूह के भीतर होता है।

बाह्यविवाह

- जब विवाह समबंध समबंधो के एक निश्चित समूह के बाहर होता है।

विचारधाराः

- साझा विचार या मान्यताएँ जो प्रमुख समूहों के हितों को न्यायसंगत साबित करने के लिए काम करते है।
- विचारधारा उन सभी समाजों में पाई जाती है। जिनमें समूहों के बीच व्यवस्थित और अंतनिर्हित असमानताएं होती हैं।
- विचारधारा की अवधारणा शक्ति के साथ निकटतता से जुड़ती है, क्योकि वैचारिक प्रणाली समूह की भिन्न शक्ति को वैध बनाने के लिए काम करती है।

वैधताः

- एक विश्वास जिसमे एक विशेष राजनीतिक आदेश सिर्फ सत्ता से वैधता प्राप्त है।

एकलविवाहः

- जब एक समय में एक स्त्री/पुरूष का एक ही पति अथवा एक पत्नी होती है।

बहुविवाहः

- एक समय में एक स्त्री अथवा पुरूष के एक से अधिक पति/पत्नी पाए जाते है।

बहुपति विवाहः

- जब एक से अधिक व्यक्ति एक महिला से विवाहित है।

बहुपत्नी विवाहः

- जब एक व्यक्ति से एक से अधिक महिला विवाहित होती है।

सेवा क्षेत्रः

- व्यापार उद्योग जैसे विनिर्मित सामानों की बजाय सेवाओं के उत्पादन से संबधित उद्योग।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in

राज्य समाजः

- एक समाज जिसमें सरकार का औपचारिक तंत्र है।

2 अंक वाले प्रश्न

1. सामाजिक संस्था से आप क्या समझते हैं ?
2. औपचारिक और अनौपचारिक सामाजिक संस्थाओं के उदाहरण दीजिए।
3. परिवार से क्या तात्पर्य है ?
4. विवाह से आप क्या समझते हैं ?
5. एक विवाह और बहुविवाह मे अन्तर स्पष्ट किजिए।
6. नातेदारी क्या है ?
7. समस्त नातेदार क्या है ?
8. वैवाहिक नातेदारी क्या है ?
9. कार्य से आप क्या समझते हैं ?
10. कार्य के विकेंद्रीकरण से आप क्या तात्पर्य है ?
11. राजनीतिक संस्था से क्या तात्पर्य है ?
12. राष्ट्रवाद से आप क्या समझते हैं ?
13. प्रभुसत्ता से क्या तात्पर्य है ?
14. सामाजिक गतिशीलता क्या है ?
15. राज्यविहीन समाज से क्या समझते हैं ?
16. धर्म से क्या तात्पर्य है ?
17. शिक्षा से क्या तात्पर्य है ?

4 अंक वाले प्रश्न

1. सामाजिक संस्थान, बोध संबंधी के कारण विचारधराओं का उल्लेख कीजिए।
2. '' आर्थिक प्रक्रियाओं के कारण परिवार और परिवर्तित होते रहते हैं'' चर्चा कीजिए।
3. महिला–प्रधान घर को उदाहरण सहित समझाइये।
4. विवाह संबंधी नियमों को समझाइये।
5. एक विवाह और बहुविवाह में अंतर स्पष्ट किजिए।
6. परिवार के स्परूप में आ रहे परिवर्तनों का उल्लेख कीजिए।
7. जनगणनाओं से स्पष्ट होता हे कि परिवार लिंगवादी है– समझाइये।
8. ''शक्ति का उपयोग सत्ता के माध्यम से किया जाता है'' इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।
9. ''नागरिकता के अधिकारों में नागरिक, राजनितिक और सामाजिक अधिकार शामिल है'' इस कथन को स्पष्ट किजिए।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in

10. धर्म के साथ संबद्ध अनुष्ठान विविध प्रकार के होते हैं, उल्लेख कीजिए।
11. धर्म के साथ संबद्ध अनुष्ठान विविध प्रकार के होते हैं, उल्लेख कीजिए।
12. धर्म समाज में महत्वपूर्ण है, समझाइएँ।
13. धर्म पर विभिन्न समाजशास्त्रियों के विचारों का उल्लेख किजिए ।
14. शिक्षा सामाजिक स्तरीकरण के मुख्य अधिकर्ता के रूप में कार्य करती है– स्पष्ट कीजिए।

6 अंक वाले प्रश्न

1. विवाह एक सामाजिक संस्था है, चर्चा कीजिए।
2. आधुनिक समाज में आर्थिक व्यवस्थाओं के विशिष्ट लक्षणों का उल्लेख कीजिए।
3. राज्य की संकल्पना स्पष्ट कीजिए।
4. "शिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है"– इस कथन को स्पष्ट किजिए।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in